"कृषि वानिकी" आधुनिक कृषि में महत्व
कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2022), खण्ड 02 भाग 05, पृष्ठ संख्या 36–37

"कृषि वानिकी" आधुनिक कृषि में महत्व

अतुल कुमार यादव,[1] राम लला पटेल,[2] शिवमोहन दीक्षित[3] एवं सृष्टि श्रीवास्तव,[4]

[1]एम0एस0सी0 (कृषि) कृषि प्रसार, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश
[2]एम0एस0सी0 (कृषि) अनुवांषिकी व पादप प्रजनन, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झासी, उत्तर प्रदेश
[3]एम0एस0सी0 (कृषि) शस्य विज्ञान, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
[4]एम0बी0ए0, मानव संसाधन, उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश भारत।

हमारे भारत देश की जनसंख्या आये दिन बढ़ती जा रही है। ऐसे में इस जनसंख्या को भोजन आवश्यकता भी निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः जनसंख्या की भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए तथा कृषि उपज को बढ़ाने हेतू अंधा – धुंध रासायनिक उर्वरकों कीटनाशकों तथा अन्य विषैले रासायनिक पदार्थो का प्रयोग किया जा रहा है। जिसके कारण हमारा पर्यावरण दिन प्रतिदिन प्रदूषित हो रहा है साथ ही साथ मनुष्यों के दैनिक जीवन पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। भू–क्षरण व पेड़ – पौधों की अंधा – धुंध कटाई से मृदा के पैतृक गुणों में ह्रास हो रहा है।

कृषि वानिकी की आवश्यकता क्यों – दिन प्रतिदिन बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण को कम करनें तथा मृदा अपरदन को रोकने एवं मृदा उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कृषि वानिकी कार्य अत्यन्त आवश्यक है। कृषि वानिकी के अन्तर्गत कृषि फसलों के साथ साथ वृक्षों एवं झाड़ियों को समुचित प्रकार से उगाया जा सकता है जिससे अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। कृषि वानिकी में पेड़ उगाने से कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम किया जा सकता है। कृषि वानिकी से कृषि उत्पादन से जुड़ी कमजोरियों को कम करने में मदद मिलती है। एंव कृषि वानिकी से रोजगार व आय में मदद मिल सकती है जिससे ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार हो सकता है।

कृषि वानिकी के अगींकरण में आने वाली समस्यायें –

- **किसानों के बीच सूचनाओं व जानकारी का अभाव –** ऐसा नहीं है कि कृषि वानिकी देश में नया है लेकिन जहा तक होना चाहिए अभी किसानों व खेतिहरों के बीच कृषि वानिकी को लेकर जानकारी का अभाव है वृक्षों के वर्गीकरण व पेड़ पौधों के व्यापार सम्बंधित जागरूकता व कानूनी पहलूओं के बारे में जानकारी की कमी होने के कारण अभी कृषि वानिकी अपनाने हेतू किसानों में अभी इच्छाओं की कमी है।
- **कृषि वानिकी में समावेश पेड़ पौधों का अस्पष्ट वर्गीकरण –** लम्बे समय से "कृषि वानिकी" कृषि व वानिकी के बीच झूलता आ रहा है खेती के साथ वानिकी में समावेश होने वाले पौधों के अस्पष्ट विभाजन होने के कारण किसानों में स्पष्टीकरण का अभाव है।
- **लघु व सीमान्त कृषि भूमि –** अधिकांश किसान लघु व सीमान्त है जिनके पास छोटे खेत (लगभग एक हेक्टेयर से भी कम) हैं जिसके कारण कृषि वानिकी को अपनाना किसानों व खेतीहरों को जोखिम उठाने जैसा लगता है।

कृषि वानिकी के अन्तर्गत लगाये जाने वाले वृक्ष :–

कृषि वानिकी के अन्तर्गत कृषि फसलों के साथ – साथ निम्न वृक्षों का समावेश किया जाता है।

- ईधन एवं लकड़ी प्राप्त करने के लिए खेतों के आस – पास चारों तरफ सागौन, शीशम, बबूल, इत्यादि पौधे लगाये जा सकते हैं।
- कृषि वानिकी में फलदार जैसे – आम, अमरूद, लीची, जामुन वृक्षों का समावेश कर सकते है।
- चारे के लिए वृक्षों का समावेश जैसे – शहतूत ।
- ढाक और पलाश के पत्तों का प्रयोग पत्तल बनाने में किया जाता है तथा यह आसानी से बंजर भूमि में भी लगाया जा सकता है
- कागज उद्योग हेतू विभिन्न प्रकार के पौधे जैसे – बांस, पॉपलर, चीड इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है।
- विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों जैसे – नीम, बबूल, आँवला, बेल, अशोक व अर्जून आदि को लगाकर हम औषधीय पौधों को भी प्राथमिकता दे सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त झाड़िदार वृक्षों को भी उगाया जा सकता है।

कृषि वानिकी का आधुनिक कृषि में महत्व :–

कृषि वानिकी का आधुनिक कृषि में निम्न महत्व है।

- उर्वरकों के खपत में कमी।
- पर्यावरण प्रदूषण में कमी।
- मृदा उर्वरता में वृद्धि।
- भू–क्षरण नियंत्रण।
- इमारती व ईधन हेतू लकड़ी की प्राप्ती।
- रोजगार में वृद्धि।
- पशुओं के लिए चारे की प्राप्ती।
- बंजर व चारागाह भूमियों का सदुपयोग।

कृषि वानिकी से होने वाले लाभ –

- कृषि वानिकी को अपनाकर आय व रोजगार में वृद्धि किया जा सकता है व जिवन स्तर को सुधारा जा सकता है।
- कृषि वानिकी को अपनाने से होने वाले प्राकृतिक आपदाओं जैसे – आंधी, तूफान व तेज हवाओं से फसलों को कम हानि पहुचती है तथा फसल सुरक्षित रहती है।
- कृषि वानिकी को अपनाकर फसलों में होने वाले क्षति की मात्रा कम की जा सकता है तथा जोखिम से बचा जा सकता है। व फसलों के नुकसान होने पर भी पेड़ पौधों के सहारे आय के स्तर को सुचारू रूप से बनाया जा सकता है।
- कुछ पौधों की पत्तिया फसलों में जैविक खाद का काम करती है पौधों की पत्तिया गिरकर मृदा में ह्यूमिक की मात्रा को बनायी रखती है जिससे फसलों को ह्यूमिक के रूप में जैविक खाद प्राप्त होता है।

कृषि वानिकी का मृदा क्षरण में महत्व :–

जब वर्षा की बूदें सीधे आकर मृदा के धरातल से टकराती हैं तो मृदा अपरदन बढता है कृषि वानिकी के अन्तर्गत लगाये गये वृक्ष वर्षा की बुदों को सीधे धरातल पर आने से रोकती हैं साथ ही पौधों की जड़ें मृदा कड़ो को जकड़ कर रखती हैं जिससे भू–क्षरण कम होता है और मृदा गृणवत्ता बनी रहती है।

पौधों की पता मृदा में मिलकर सड़–गल जाती है। जिससे ह्यूमस का निर्माण होता है। जो भूमि की जल धारण क्षमता व रन्ध्रावकाशों की संख्या में वृद्धि करता है और मृदा गुणवत्ता में सुधार होता है।